विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग दशम्, विषय- हिंदी

दिनांक- 6-9 -2020

Based on NCERT syllabus

।। अध्ययन सामग्री ।।

शिक्षक दिवस की ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ अनुशासन, प्रेम और ज्ञान से भरपूर जिंदगी जीने शुभ आकांक्षा प्रेषित कर रही हैं ....

बच्चों , पिछले कई कक्षा से आप लगातार कृतिका के पाठ जॉर्ज पंचम की नाक को पढ़ते आ रहे हैं, जिसमें अब तक आपने पढ़ा- महारानी एलिजाबेथ द्वितीय भारतीय दौरे पर आने वाली हैं , लेकिन हम भारतीयों के लिए एक बड़ी समस्या खड़ी हुई है कि इंडिया गेट पर लगे जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर नाक गायब है । इस नाक को बिठाने के लिए सरकारी तंत्रों में बहुत जद्दोजहद चल रही है सारे अधिकारी परेशान हैं मशवरे और बैठकें लगातार चल रही हैं ,कोई निदान नहीं निकल रहा है । देश के अन्य सारे मसले दरकिनार कर दिए गए हैं । सबसे बड़ी समस्या भी देश की जॉर्ज पंचम की नाक बनी हुई है ।

एक मूर्तिकार को किसी तरह खोजा गया है जिसने इस चुनौतीपूर्ण और महान कार्य को करना स्वीकार किया । मूर्ति पत्थर के जिस किस्म से बनी हुई है उसी किस्म के पत्थर के डिमांड मूर्तिकार की तरफ से की गई । तब एक महत्वपूर्ण बैठक में यह तय हुआ कि मूर्तिकार ही उस बेशकीमती पत्थर को ढूंढ कर लाएगा । चाहे वह विश्व के किसी कोने में हो उसे वह लेकर आएगा । अब आगे.....

हुक्कामों के चेहरों पर उदासी के बादल छा गए। एक खास कमेटी बनाई गई और उसके जिम्मे यह काम दे दिया गया कि जैसे भी हो, यह काम होना है और इस नाक का दारोमदार[5] आप पर है।

आखिर मूर्तिकार को फिर बुलाया गया, उसने मसला हल कर दिया। वह बोला, "पत्थर की किस्म का ठीक पता नहीं चला तो परेशान मत होइए, मैं हिंदुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊँगा और ऐसा ही पत्थर खोजकर लाऊँगा।" कमेटी के सदस्यों की जान में जान आई। सभापति ने चलते-चलते गर्व से कहा, "ऐसी क्या चीज़ है जो हिंदुस्तान में मिलती नहीं। हर चीज़ इस देश के गर्भ में छिपी है, ज़रूरत खोज करने की है। खोज करने के लिए मेहनत करनी होगी, इस मेहनत का फल हमें मिलेगा...आने वाला ज़माना खुशहाल होगा।"

यह छोटा-सा भाषण फ़ौरन अखबारों में छप गया।

मूर्तिकार हिंदुस्तान के पहाड़ी प्रदेशों और पत्थरों की खानों के दौरे पर निकल पड़ा। कुछ दिन बाद वह हताश लौटा, उसके चेहरे पर लानत बरस रही थी, उसने सिर लटकाकर खबर दी, "हिंदुस्तान का चप्पा-चप्पा खोज डाला पर इस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला। यह पत्थर विदेशी है।"

सभापति ने तैश में आकर कहा, "लानत है आपकी अक्ल पर! विदेशों की सारी चीज़ें हम अपना चुके हैं–दिल-दिमाग, तौर-तरीके और रहन-सहन, जब हिंदुस्तान में बाल डांस तक मिल जाता है तो पत्थर क्यों नहीं मिल सकता?"

मूर्तिकार चुप खड़ा था। सहसा उसकी आँखों में चमक आ गई। उसने कहा, "एक बात मैं कहना चाहूँगा, लेकिन इस शर्त पर कि यह बात अखबार वालों तक न पहुँचे..."

सभापति की आँखों में भी चमक आई। चपरासी को हुक्म हुआ और कमरे के सब दरवाज़े बंद कर दिए गए। तब मूर्तिकार ने कहा, "देश में अपने नेताओं की मूर्तियाँ भी हैं, अगर इजाज़त हो और आप लोग ठीक समझें तो...मेरा मतलब है तो...जिसकी नाक इस लाट पर ठीक बैठे, उसे उतार लाया जाए..."

सबने सबकी तरफ़ देखा। सबकी आँखों में एक क्षण की बदहवासी के बाद खुशी तैरने लगी। सभापति ने धीमे से कहा, "लेकिन बड़ी होशियारी से।"

और मूर्तिकार फिर देश-दौरे पर निकल पड़ा। जॉर्ज पंचम की खोई हुई नाक का नाप उसके पास था। दिल्ली से वह बंबई पहुँचा। दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, शिवाजी, कॉवसजी जहाँगीर–सबकी नाकें उसने टटोलीं, नापीं और गुजरात की ओर भागा– गांधी

5. किसी कार्य के होने या न होने की पूरी जिम्मेदारी, कार्यभार

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा पांच के

पढ़े गए अंश से पांच प्रश्नों का निर्माण करें इससे आपकी वैचारिक क्षमता का निर्माण होगा ।